जाग्रत मानव
व्यवहारवादी समाजशास्त्र

(अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन मध्यस्थ दर्शन सहअस्तित्ववाद)

- स्वायत्त मानव
- परिवार मानव
- समाज मानव
- व्यवस्था मानव

संकलनकर्ता : सुरेन्द्र सुनीता पाठक

व्यवहार वादी मानव/अखंड समाज का स्वरूप

स्वायत्त मानव अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व वैभव के रूप में

- **स्वयं में विश्वास,**
- **श्रेष्ठता के प्रति सम्मान,**
- **प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन,**
- **व्यवहार में सामाजिक,**
- **व्यवसाय में स्वावलंबन** रूप में प्रतिष्ठा है।

यह जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन मूलक विधि से लोकव्यापीकारण होने के तथ्य को स्पष्ट किया है। ऐसे प्रत्येक मानव के सार्थक सफल और परिवार मूलक व्यवस्था का धारक-वाहक होना पाया जाता है। इस विधि से सर्वमानव

- **स्वायत्त मानव,**
- **परिवार मानव,**
- **परिवार व्यवस्था मानव**

के रूप में शिक्षा-संस्कारपूर्वक नित्य वर्तमान होने के आधार पर **मानव जाति एक** होने का अर्थ अपने आप में नित्य वर्तमान है।

अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व विधि ही इसका मूल सूत्र है।

मानव जाति एक होने का सूत्र सार्वभौम व्यवस्था

यह सर्वतोमुखी समाधान सहज अभिव्यक्ति, संप्रेषणा और प्रकाशन ही है। यह मानवीयतापूर्ण मानव सहज प्रमाण है। इसका स्वरूप

❖ **परिवार रचना क्रम में विश्व परिवार मानव**

- स्वायत्त मानव से
- परिवार मानव
- समाज मानव/विश्व परिवार मानव/अखंड समाज से

❖ **और सभा क्रम में परिवार व्यवस्था मानव**

- परिवार सभा,
- परिवार समूह सभा,
- ग्राम परिवार सभा और विश्व परिवार सभा क्रम में तक

❖ **जिसका प्रयोजन है :**

❖ **समाज के चारों आयाम-**(संस्कृति, सभ्यता, विधि, व्यवस्था)

❖ **व्यवस्था के पाँचों आयामों** (शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम)

में सामरस्यता सहज प्रमाणों को अक्षुण्ण बनाये रखे जाना स्पष्ट है।

- मानव का वैभव प्रतिष्ठा और अपेक्षा अनुपम संगीत चेतना विकास मूल्य शिक्षा से ही अपने-आप सर्वसुलभ होता है।
- परिवार मूलक स्वराज्य विधि से सार्वभौमता का अर्थ सार्थक होता है।

परिवार रचना क्रम में

- ❖ स्वायत्त मानव,
- ❖ परिवार मानव

जागृत मानव संबंधों में निहित मूल्य निरंतर निर्वाह होता है। समझदारी पूर्वक मूल्यांकन में उभयतृप्ति सदा-सदा ही रहता है। इसी आधार पर प्रयोजन का स्वरूप पुनश्च समीचीन सम्बंध-मूल्य-मूल्यांकन और

व्यवस्था कार्य विधि में

अपने आप में व्यवस्था कार्य विधियों के लिए तत्पर रहना अपेक्षित है।

- ➢ परिवार व्यवस्था में भागीदारी,
- ➢ ग्राम परिवार व्यवस्था में भागीदारी से
- ➢ विश्व परिवार व्यवस्था तक में भागीदारी है।

यही प्रधान रूप में ध्यान में रहने की आवश्यकता है।

सर्वतोमुखी समाधान और तृप्ति सहज निरंतरता सर्वमानव का अभीष्ट है। जागृत मानसिकता का संतुलन और सार्थक स्वरूप यही है। संतुलन ही मानव सहज स्वभाव गति है। ऐसे स्वभाव गति का प्रमाण स्वरूप स्वायत्त मानव और परिवार मानव ही है। स्वायत्त मानव, मानवीय शिक्षा-संस्कार पूर्वक सार्थक होता है। मानवीय शिक्षा-संस्कार परंपरा और शिक्षा ग्रहण करने की अपेक्षा हर मानव में निहित है।

मानव जाति, धर्म, कर्म, व्यवहार, दीक्षा, संस्कार

- हर मानव में, से, के लिये और मानव परंपरा में, से, के लिये एक अनिवार्य अध्ययन, अवधारणा, अनुभव प्रमाण है।
- इसी क्रम में मानव परंपरा अपने संपूर्ण वैभव को **स्वायत्त मानव, परिवार मानव** के रूप में प्रमाणित होना सहज है।
- फलस्वरूप अखण्ड समाज में भागीदारी पूर्वक **समाज मानव** और सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारीपूर्वक व्यवस्था मानव के रूप में प्रमाणित होना शिक्षा-संस्कार का सार्थक प्रयोजन है।

नियम त्रय विधि से समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को,

- परिवार मानव,
- समाज मानव और
- व्यवस्था मानव के रूप में सार्थक बनाता है।

- यह मानव परंपरा का वांछित फल है। इसे पाने के लिये ही, सर्वसुलभ होने के लिए **स्वराज्य व्यवस्था पाँचों आयाम सम्पन्न विधि से दस स्तरीय स्वरूप में अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था** का स्पष्ट होना स्वाभाविक है।
- इसकी आवश्यकता हर मानव में देखने को मिलता है। इसे सफल और अक्षुण्ण बनाने की विधि से ही मूल्यांकन कार्य सम्पन्न होना स्वाभाविक है।

परिवार क्रम विधि और सभा क्रम विधि

स्वायत्त मानव पूर्वक परिवार मानव सहज विधि से सहज होना पाया जाता है। सदा-सदा के लिये परिवार में सम्बन्ध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति होती है। परिवार की परिभाषा भी है परस्पर सम्बन्धों को पहचानते हैं, मूल्यों का निर्वाह करते हैं, मूल्यांकन करते हैं और उभयतृप्ति पाते हैं। यही परिवार का आधार बिन्दु है। अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्रपात "परिवार मानव" पद ही है।

- **परिवार व्यवस्था** सार्वभौम व्यवस्था के लिये सूत्र है।
- **परिवार रचना** स्वयं अखण्ड समाज रचना का सूत्र है।

जागृत परिवार मानव परिवार सहज आवश्यकता के लिये समझदारी से अपनाया उत्पादन-कार्य के लिये एक-दूसरे के पूरक होना पाया जाता है। इस विधि से हर परिवार में समाधान, समृद्धि प्रमाणित होती है, अभय सह-अस्तित्व का सूत्र समाया रहता है। इसे प्रमाणित करने की आवश्यकता क्रम में
अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का ताना-बाना, इसलिये बना है कि समाज ही व्यवस्था और व्यवस्था ही समाज को संतुलित बनाये रखता है।

- **परिवार क्रम विधि से समाज रचना,**
- **सभा क्रम में व्यवस्था गति स्पष्ट हो जाता है।**

जैसे परिवार ही स्वायत्त मानवों का संयुक्त अभिव्यक्ति होना स्पष्ट किया जा चुका है। हर नर-नारी स्वायत्त पद में ही परिवार मानव अर्हता, स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार को प्रमाणित करते हैं।

जागृत मानव-स्वायत्त मानव

जागृति के प्रमाण का तात्पर्य

- **स्वायत्त मानव के रूप में पीढ़ी से पीढ़ी समृद्ध बनाने से है।**

इससे स्पष्ट हो गया है कि

- **शिक्षा-संस्कार का उद्देश्य स्वायत्त मानव के रूप में समृद्ध करने में सक्षम रहना है।**

- मानव अपने को प्रमाणित किये बिना परंपरा होना संभव नहीं है।

1. स्वायत्त मानव में विश्वास का तात्पर्य

स्वायत्त मानव

- स्वयं के प्रति विश्वास,
- स्वयं में विश्वास

का तात्पर्य

- व्यवस्था के रूप में जीने,
- समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने में विश्वास से हैं।

- प्रत्येक मानव स्वयं पर विश्वास नहीं करेगा, तब तक अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का अंगभूत होना प्रमाणित नहीं करेगा।

- स्वायत्त मानव ही अर्थात् स्वायत्त नर-नारी ही परिवार मानव के रूप में प्रमाणित होते हैं।
- परिवार का परिभाषा में वर्तमान होना ही स्वायत्त मानव का प्रमाण है।

2. स्वायत्त मानव में श्रेष्ठता के प्रति सम्मान

- व्यवस्था में जीने और **समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने में समर्थ सभी व्यक्ति श्रेष्ठ हैं** जो प्रमाण के रूप में प्रमाणित किये जा रहे हैं। ऐसे सभी के प्रति सम्मान होना स्वाभाविक है। यही तथ्य से श्रेष्ठता के प्रति सम्मान स्पष्ट है।

- **स्वयं जिस बात को चाहते हैं उन तथ्यों में प्रमाणित सभी व्यक्ति सम्मान के लिये पात्र** हैं। ऐसे व्यक्तियों के प्रति सम्मान व्यक्त करने से हैं।

सम्मान का तात्पर्य

- **पूर्णता के अर्थ में स्वीकृति और**
- **मूल्यांकन सहित संप्रेषित हो पाना।**

- संप्रेषणा का भी तात्पर्य
- पूर्णता के ही अर्थ में ही प्रस्तुत हो पाना बनता है।

इसलिये सम्मान सहज श्रेष्ठता सर्वमानव में स्वीकृत होता है।

संबंधों के आधार पर जैसा मानव संबंधों को प्रयोजनों और व्यवस्था के सूत्रों के रूप में देखा गया है कि

- सम्मानित होने वाला और सम्मान करने वाले का परस्परता में होने वाले कार्य-व्यवहार **सम्मान संबंध** का साक्ष्य है।
- **सम्मान संबंध** में स्पष्ट हो चुका है कि स्वयं से अधिक जागृत प्रमाणित व्यक्तियों के प्रति, स्वयं के प्रति विश्वास के आधार पर स्वयं स्फूर्त विधि से मुखरित और आचरित होने वाला क्रियाकलाप जिसका प्रयोजन सम्मानित होने वाले व्यक्ति में सम्मान किया या स्वीकृति होना आवश्यक है।
- **सम्मान परस्परता में मूल्यांकन** है। ऐसा सम्मान करने और सम्मानित होने का मूल्यांकन उभयतृप्ति का स्रोत होना पाया जाता है।
- **सम्मान करने, सम्मान स्वीकृत करने** का क्रियाकलाप ही जागृति सहज व्यवहार कहलाता है।
- संबंध स्वयं से, स्वयं के लिये, स्वयं में जाना, माना, पहचाना हुआ, निर्वाह करने के लिये आधार है। स्वयं में तृप्ति पाने का उद्देश्य अथवा तृप्त होने का उद्देश्य और तृप्त रहने का उद्देश्य बना ही रहता है।

3. स्वायत्त मानव में प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन

❖ स्वयं के प्रति सम्मान, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान सहित ही **प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन** प्रमाणित होता है।

❖ **संतुलन का तात्पर्य**

- ज्ञान, दर्शन, विवेकपूर्ण तर्क (विवेचना, विश्लेषण) और आचरणों में सामरस्यता, एक दूसरे के साथ पुष्टि प्रमाण होने से है।

❖ **प्रतिभा का तात्पर्य**

- सम्पूर्ण आयाम, कोण, दिशा, परिप्रेक्ष्य, देश, कालों में प्रामाणिकता और उसकी निरंतरता, समाधान और उसकी निरंतरता के रूप में अभिव्यक्त संप्रेषित, प्रकाशित करने में विश्वास।

❖ **व्यक्तित्व का तात्पर्य**

- किये जाने वाले आहार, विहार, व्यवहार और कार्यों से मूल्यांकित होने से है।

❖ **प्रतिभा का तात्पर्य**

- सम्पूर्ण आयाम (अनुभव, विचार, व्यवहार, व्यवसाय),
- कोण (न्याय, धर्म, सत्य),
- दिशा (जागृति-विकास),
- परिप्रेक्ष्य (व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र, अंतरराष्ट्र),
- देश (रचना की अवधि),
- कालों (वर्तमान)

में प्रामाणिकता और उसकी निरंतरता, समाधान और उसकी निरंतरता के रूप में अभिव्यक्त संप्रेषित, प्रकाशित करने में विश्वास।

इसका सत्यापन भी इसी के साथ समाया रहता है।

- सत्यापन मैं **कर सकता हूँ, करूँगा, किया हूँ, कर रहा हूँ**, इन ध्वनि और इन ध्वनियों से संकेतिक ध्रुवों से है।

- **किया हुआ हूँ, कर रहा हूँ,**
  यह कर **सकता हूँ, करूँगा** का प्रेरणास्रोत होना पाया जाता है।
- इसी विधि से परंपरा समृद्ध होने के तथ्य को समझा गया है।

4. व्यवहार में सामाजिक

स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलनपूर्वक ही मानव व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलंबी होना पाया जाता है।

- **व्यवहार में सामाजिक होने का तात्पर्य** व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होना ही है।
- **व्यवहार में सामाजिक** होने का मूल रूप आचरण ही है। मानवीयतापूर्ण आचरण में ही मूल्य, चरित्र, नैतिकता का प्रकाशन-संप्रेषणा होना पाया जाता है। मूल्यों का प्रमाण संबंधों को पहचानने के उपरान्त ही होता है। यह सर्वमानव विदित है अथवा सर्वमानव इसे परीक्षण कर सकता है। मूल्य, चरित्र, नैतिकताएं अविभाज्य रूप में स्वायत्त मानव में प्रमाणित होने का क्रम ही आचरण है।
- अस्तित्व सहज सह-अस्तित्व विधि से सम्बन्ध नित्य वर्तमान है।
  संबंध का तात्पर्य पूर्णता के अर्थ में अनुबंधित होने से है।
  अनुबंध का तात्पर्य निष्ठा से है। वह भी स्वीकृतिपूर्वक स्वयं स्फूर्त निष्ठा से है। यह निष्ठा स्वायत्त मानव में ही प्रतिपादित और प्रमाणित होता है।
- मानव अपने स्वायत्त आचरण सहित ही कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित रूप में **सामाजिक होना प्रमाणित करता है।**

5. व्यवसाय में स्वावलंबन : एक आवश्यकीय प्रक्रिया

मानव में, से, के लिये आवश्यकताएँ दो रूप में पाया जाता है-

- सामान्य आकांक्षा,
- महत्वाकांक्षा से संबंधित वस्तु और उपकरण।

❖ सामान्याकांक्षा में वांछित वस्तुएँ आहार, आवास, अलंकार कार्यों में उपयोगी होना पाया जाता है। शरीर पुष्टि और संरक्षण के रूप में आहार को, संरक्षण के अर्थ में आवास और अलंकार को उपयोगी होना पाया जाता है।

❖ महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुएँ ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों के गति सीमा से अधिक गति के लिये दूर-श्रवण, दूरदर्शन, दूरगमन का प्रयोजन देखने को मिलता है।

उल्लेखनीय तथ्य यही है कि

➢ सामान्य आकांक्षा संबंधी वस्तुओं से ही **समृद्धि का प्रकाशन** हो पाता है।

➢ महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुएँ समय-समय पर दूर-संचार समाज गति में पूरक रूप में उपयोगी होते हुए **समृद्धि का आधार नहीं** बन पाता है।

➢ गति और शीघ्रता के आधार पर इसका मूल्यांकन हो पाता है।

स्वायत्त मानव

- व्यवसाय में स्वावलंबी,
- व्यवहार में सामाजिक होने में पारंगत,
- कुशल और निपुण रहना पाया जाता है।

पारंगत का तात्पर्य

- परस्पर मानव प्रकृति में जागृत सहज स्वभावों, गुणों, कार्य-गति
- व्यवहार गति और
- उसके परिणामों का आंकलन करने
- और उसका मूल्यांकन करने के अधिकार से
- इसके प्रयोग विधि से स्वयं प्रतिष्ठित होना पाया जाता है।

ऐसी प्रतिष्ठा सर्वमानव की अपेक्षा है इसका भी सर्वेक्षण होना सहज है।

निपुणता का तात्पर्य

प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य को स्थापित करने का सामर्थ और उसका क्रियान्वयन और मूल्यांकन से है।

कुशलता का तात्पर्य प्राकृतिक ऐश्वर्य पर उपयोगिता मूल्य और कला मूल्य को स्थापित करने और उसका मूल्यांकन करने के प्रमाणों से है।

इस विधि से सर्वाधिक सामान्यकांक्षा संबंधी संपूर्ण उत्पादन का कार्य स्वरूप स्पष्ट हो जाता है।

स्वायत्त मानव की पहचान

- निपुणता, कुशलता, पांडित्य संपन्न मानव +
- प्राकृतिक ऐश्वर्य बनाम नैसर्गिकता +
- हस्तलाघव +
- मानसिकता का संयुक्त रूप में संपूर्ण उत्पादन

मानव में, से, के लिये होना देखा गया है।

हस्त लाघव का तात्पर्य सभी ज्ञानेन्द्रिय, कर्मेन्द्रिय से निपुणता, कुशलता, पांडित्य रूपी कार्य करने से है।

दूसरी भाषा में –

- उत्पादन में भागीदारी, व्यवहार में सामाजिक होने का संतुलन तत्व और
- व्यवहार में सामाजिकता, व्यवसाय में स्वावलंबी होने का संतुलन तत्व इस प्रकार समाजिकता-स्वावलंबन पूरक होने का स्वरूप प्रमाणित होता है।
- ऐसे संतुलन कार्य में प्रवृत, रत, निष्ठान्वित रहना ही कायिक वाचिक, मानसिक, कृत-कारित अनुमोदित, जागृत, स्वप्न, सुषुप्ति में क्रियारत रहने का सार्थकता है।
- यही अखंड समाज-सार्वभौम व्यवस्था का आधार सूत्र और बीज रूप है।

परिवार मानव

- स्वायत्त मानव ही अर्थात् स्वायत्त नर-नारी ही **परिवार मानव** के रूप में प्रमाणित होते हैं।
- परिवार का परिभाषा में वर्तमान होना ही स्वायत्त मानव का प्रमाण है।
- मानवीय शिक्षा-संस्कारपूर्वक ही हर विद्यार्थी स्वायत्तता सम्पन्न होता है।
- मानवीय शिक्षा का परिभाषा भी यही है। जब यह परिवार परिभाषा में प्रमाणित होते हैं तब सहज ही एक-दूसरे के साथ सम्बन्धों को पहचानते हैं, मूल्यों का निर्वाह करते हैं, परिवार सहज आवश्यकता से अधिक उत्पादन करते हैं और श्रम मूल्य का भी मूल्यांकन करते हैं।
- सम्बन्ध निर्वाह, मूल्य निर्वाह का मूल्यांकन करते हैं, उभयतृप्ति पाते हैं। यही परिवार मानव का प्रमाण है।
- **परिवार मानव पद** में ही मानवीयतापूर्ण आचरण सार्थक हो पाता है। परिवार में न्याय सार्थकता प्रमाणित रहता ही है। इसी आधार पर अर्थात् **परिवार मानव** ही **व्यवस्था मानव** होने के आधार पर बंधनमुक्ति के प्रमाण स्पष्ट हो जाते है।

- **परिवार मानव विधि** से हर काल, हर परिस्थिति में (मानवीयतापूर्ण) न्याय प्रदायी योग्यता और क्षमता को प्रमाणित करना सहज है। यही प्रधान रूप में मुक्ति का प्रमाण है। ऐसी **परिवार मानव** के रूप में जीने की सम्पूर्ण चित्रण स्वयं में **समाज रचना का चित्रण** है।
- परिवार मानव विधि से ही स्वराज्य वैभव का उदय होना देखा जाता है। स्वराज्य व्यवस्था ही होता है, शासन नहीं होता।
- हर परिवार में शरीर यात्रा के लिए
  - **शरीर पोषण,**
  - **संरक्षण एवं**
  - **समाज गति**

  के लिये आवश्यकीय वस्तुओं को उत्पादित करने का कार्यकलाप समाया रहता है।
- ऐसे परिवार में उक्त तीनों प्रकार की आवश्यकताएँ बनी ही रहती है। इसके निर्वाह क्रम में **उत्पादन कार्य की आवश्यकता** बना ही रहता है।
- परिवार गति और समाज गति के लिए उत्पादन कार्य एक आवश्यकीय तत्व है।
- सम्बन्ध-मूल्य-मूल्यांकन-उभयतृप्ति अथवा परस्पर तृप्ति विधि से व्यवहार और आचरण को प्रकट करना **मूलत: परिवार का तात्पर्य है।**

- मानव परम्परा में अनुभवमूलक **विधि, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता, शिक्षा, उत्पादन, विनिमय, स्वास्थ्य-संयम** इन सभी कार्यों में सहअस्तित्व का नजरिया स्पष्ट होता ही रहता है। यही मानव कुल का परम वैभव है। यही स्वराज्य और स्वतंत्रता की महिमा है।

- **स्वराज्य और स्वतंत्रता** को प्रमाणित करना है या नहीं? यह संवाद का मुद्दा हो सकता है। इसे मानव कुल निरीक्षण परीक्षण करेगा ही।

- **लाभ-हानि मुक्त विनिमय** प्रणाली प्रत्येक परिवार में, से, के लिये शांतिकारक सूत्र होना देखा गया।

- परिवार मानव पद में ही मानवीयतापूर्ण आचरण सार्थक हो पाता है। परिवार में न्याय सार्थकता प्रमाणित रहता ही है। इसी आधार पर अर्थात् परिवार मानव ही व्यवस्था मानव होने के आधार पर बंधनमुक्ति के प्रमाण स्पष्ट हो जाते है।

- हर परिवार-मानव **समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व** पूर्वक परिवार परंपरा को निर्वाह करने योग्य है, चाहते है और इसे एक-दूसरे के पूरक विधि से निर्वाह करते है, और कर सकते हैं।

परिवार मानव : परिवार सभा क्रम से सभा विधि व्यवस्था

- **परिवार मानव के रूप में** अनेक परिवार सभा यथा परिवार समूह सभा, ग्राम परिवार सभा के रूप में संतुलन निर्वाचन विधि से कार्यरत होना पाया जाता है।
- परिवार मानव, परिवार समूह, ग्राम परिवार और विश्व परिवारों तक सभी परिवार सभा क्रम से, (क्रम से का तात्पर्य विशालता और समग्रता की ओर) परिवार समृद्धि सम्पन्नता का व **सभा विधि व्यवस्था** का धारक-वाहक रूप में समाज और व्यवस्था को अभिव्यक्त करते हैं।
- हर परिवार, परिवार समूह, ग्राम परिवार, ग्राम परिवार समूह विधि से विश्व परिवार तक संतुलन का स्वरूप मानवीय शिक्षा-संस्कार न्याय, उत्पादन, विनिमय, स्वास्थ्य संयम, मानवीय शिक्षा सुलभता पूर्वक संबंध में सहज स्वायत्त रहना पाया जाता है।
- हर सुलभता में उभयता एक अनिवार्य स्थिति है। उभयता का तात्पर्य मानव की परस्परता; नैसर्गिक अर्थात् जल, वायु, धरती और सूर्य उष्मा का परस्परता सदा रहता ही है।
- मानव के परस्परता में संबंधों के साथ ही नैसर्गिक उपलब्धियों अर्थात् उत्पादन होता है। क्योंकि नैसर्गिक संयोग से ही हर उत्पादन होना देखा जाता है। ऐसा उत्पादन, विनिमय के लिये वस्तु होना पाया जाता है।

मानवीयतापूर्ण विधि से
अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का होना प्रधान लक्ष्य है।

इसी विधि में मौलिक अधिकार और इसी क्रम में मौलिक अधिकार का स्पष्टीकरण एक दूसरे को इंगित होता है, स्वीकृत होता है, जाँचने की विधि स्वयं स्फूर्त होता है। इसी क्रम में स्वायत्त मानव के वैभवों का परीक्षण जैसा-

- स्वयं के प्रति विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान करने का अधिकार, प्रक्रिया और प्रमाण,
- प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलनाधिकार प्रक्रिया और प्रमाण और
- व्यवहार में सामाजिक एवं व्यवसाय में स्वावलंबनाधिकार, प्रक्रिया और प्रमाण एक दूसरे को समझ में आता है।
- **समझ में आने का तात्पर्य** जानने-मानने-पहचानने-निर्वाह करने से है।

ऐसे मानव ही **परिवार मानव और व्यवस्था मानव** के रूप में प्रमाणित होना सहज है। यही सम्पूर्ण

- **स्वत्व, स्वतंत्रता** और
- **अधिकारों का वैभव और विस्तार** है।

इस प्रकार कर्तव्य दायित्व ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में अधिकार है।

जागृति ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सहज परंपरा रूप में मानव संतानों को सुलभ हो जाती है। शिक्षा-स्वरूप में सह-अस्तित्व विधि से प्रयोजन कार्य-विश्लेषण विधि को अपनाना सहज है। सह-अस्तित्व विधि से विज्ञान विधियाँ सकारात्मक होना पाया जाता है। अन्यथा नकारात्मक होती है। सकारात्मक का आधार सह-अस्तित्व और व्यवस्था है। इसी आधार पर होने वाली स्पष्ट अवधारणाएँ निष्ठा का सूत्र होना देखा गया। निष्ठा का तात्पर्य वर्तमान में विश्वासपूर्वक किये जाने वाले क्रियाकलाप हैं। सभी क्रियाकलाप **व्यवहार, व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी** सहज प्रमाण है। इन्हीं व्यवहार वैभव मानव में **स्वत्व, स्वतंत्रता, अधिकार ही स्वराज्य व्यवस्था** कहलाता है।

- मानवीयता पूर्ण आचरण तीनों आयाम में (मूल्य, चरित्र, नैतिकता) सम्पन्न होता है।
- मानवीयता पूर्ण चरित्र को स्वधन, स्वनारी/स्वपुरूष, दयापूर्ण कार्य-व्यवहार के रूप में देखा गया है।
- चरित्र के साथ मूल्यों के स्वरूप को संबंधों की पहचान, मानव मूल्य, स्थापित मूल्य, शिष्ट मूल्य का निर्वाह, मूल्यांकन पूर्वक उभयतृप्ति के रूप में होना देखा गया है।
- नैतिकता को तन, मन, धन (अर्थ) का सदुपयोग और सुरक्षा के रूप में देखा गया है।
  - मूल्य के रूप में **परिवार मानव**
  - चरित्र के रूप में **समाज मानव,** और
  - नैतिकता के रूप में **व्यवस्था मानव** होना प्रमाणित है।

- यह मानवत्व रूपी मानव चेतना पूर्वक सार्थक होना पाया जाता है।

मूलत: स्वराज्य **व्यवस्था मानव** का समझ प्रक्रिया का संयुक्त वैभव ही है –

- वह भी जागृति पूर्ण वैभव है। अतएव जागृतिपूर्वक मानव लक्ष्य एवं जीवन लक्ष्यों को सफल बनाते हैं।
- जो दायित्व और कर्तव्य पूर्वक ही सफल होता है। इसलिये न्यायपूर्ण व्यवहार कार्यों में दायित्व और कर्तव्य मूल्यांकित होता है।
- इसी के साथ जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना सुलभ होता है। इसी विधि से न्याय सुलभता का मार्ग प्रशस्त होता है।
- न्याय सुलभता सर्व स्वीकृति तथ्य है। न्यायिक विधि से अखण्ड समाज, पाँचों आयामों में स्वराज्य विधि से सार्वभौम व्यवस्था प्रमाणित होना स्वाभाविक है।
- हर मानव अपने को जागृतिपूर्वक इन दोनों मुद्दे में अपने उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता को मूल्यांकित करता है।
- यही स्वस्थ सामाजिक मानव और व्यक्तित्व का तात्पर्य है। यह हर मानव की आवश्यकता है।
- इस विधि से सम्पूर्ण दायित्वों, कर्तव्यों को उसके प्रयोजन सहित प्रमाणित करना, मूल्यांकित करना सहज है।

- **स्वायत्त मानव** ही परिवार में व्यवस्था के रूप में जीकर प्रमाणित हो पाता है। यह परिवार व्यवस्था के रूप में ही गण्य होता है। ऐसे **परिवार मानव** समग्र व्यवस्था में अर्थात् विश्व परिवार व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करने योग्य हो पाते हैं। अतएव
  - स्वायत्त मानव से परिवार मानव,
  - परिवार मानव से ही **व्यवस्था मानव,**
  - व्यवस्था मानव से ही समग्र व्यवस्था में भागीदारी निर्वाह करने का

  स्वत्व, स्वतंत्रता और अधिकार को स्पष्ट करता है।

- **अधिकार का तात्पर्य** अनुभव बल के रूप में दृष्टव्य है। यही मानव अधिकार है। अनुभव बल को प्रमाणित करने का कार्य ही स्वत्व के रूप में देखने को मिलता है।
- ऐसे अधिकार और स्वत्व के सूत्रों पर व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होना ही **स्वतंत्रता** है।
- यही मानव कुल में **संप्रभुता और प्रभुसत्ता** के रूप में वैभवित होना जिसकी सार्वभौमता सर्व स्वीकार होना सहज है। इसी तथ्य के आधार पर सर्वशुभ योजना समीचीन है।
- सर्वशुभ सम्पन्न होने का **अधिकार, स्वत्व, स्वतंत्रता** हर मानव में, से, के लिए समीचीन रहना पाया जाता है।
- ऐसा सर्वशुभ **समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व** में अनुभव सहज प्रमाण ही है।
- इसे सर्वसुलभ करने के क्रम में ही **हर व्यक्ति, हर परिवार प्रमाणित होने का अवसर, आवश्यकता विद्यमान** है ही।

पाँचों आयाम रेखाकार और वर्तुलाकार विधि से अन्तर सम्बन्धित और कार्यरत रहते हैं। रेखाकार विधि से अन्तर्संबंध, वर्तुलाकार विधि से पांचों समितियों को अविभाज्य सम्बन्ध आवर्तनशीलता के रूप में देखने को मिलता है।

इसके मूल में मानव ही मानवीय शिक्षा-संस्कारपूर्वक **स्वायत्त मानव, परिवार मानव (समाज मानव) और व्यवस्था मानव** के रूप में प्रमाणित होना ही परिवार मूलक के स्वराज्य व्यवस्था का अबाध गति है। इस क्रम में ग्राम परिवार व्यवस्था में विनिमय कोष का कार्य का सामान्य चित्र जो उत्पादन और विनिमय सुलभ रूप को स्पष्ट करता है :-

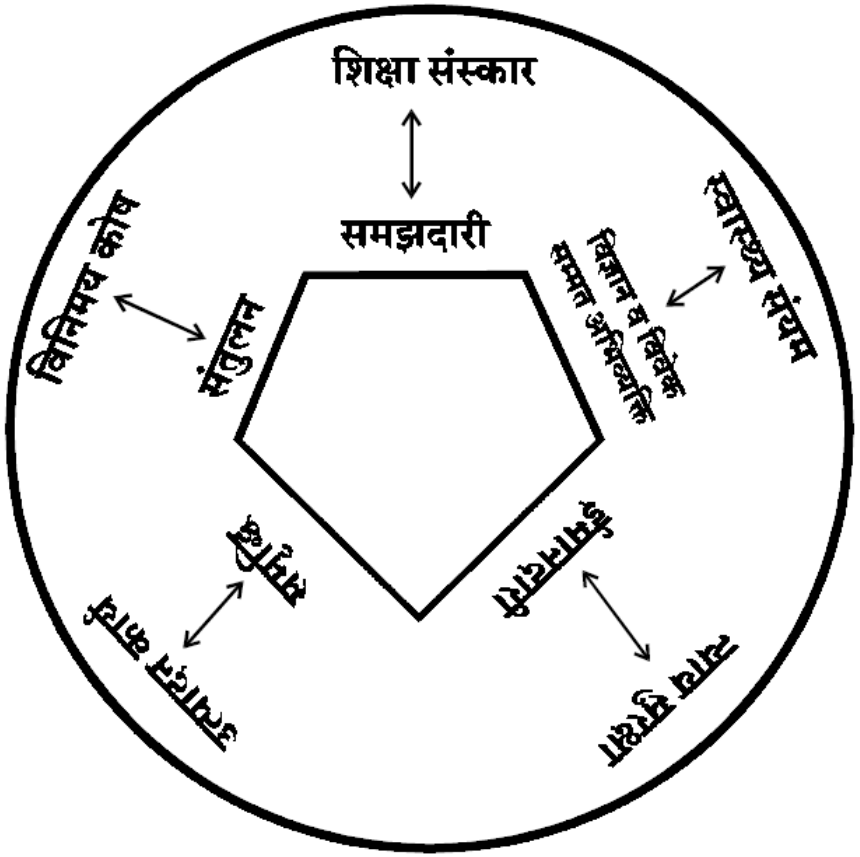

इस चित्र में ग्राम में उत्पादनों का सामान्य ध्यानाकर्षण किया है। सामान्य का तात्पर्य हर गाँव में एक ही परिवार में सभी प्रकार के उत्पादन सीमाओं को बांधना संभव नहीं है। विभिन्न प्रकार के उत्पादन होना वांछनीय है। अतएव जिन-जिन ग्रामों की सीमा में जो-जो उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है, उसका विनिमय कार्य को श्रम विनिमय विधि से सम्पन्न करना ही विनिमय कोष का प्रधान कार्य है।

पूर्णता के अर्थ में स्वत्व, स्वतंत्रता, उपकार संयुक्त रूप से वैभव संपन्न परंपरा है

विधि का कार्यरूप

- नियम और न्याय सम्मत विधि से किया गया कार्य-व्यवहार है।
- नियम और न्याय में नित्य संगीत ही समाधान के रूप में होना ख्यात है।
- मूलत: विधि अपने सूत्र रूप में नियम और न्याय ही है।

नियमों को तीन प्रकार से हैं।

- बौद्धिक नियम (स्वधन, स्वनारी/स्वपुरुष दयापूर्ण)
- सामाजिक नियम (असंग्रह, विद्या, स्नेह, अभय और सरलता)
- प्राकृतिक नियम (1.पूरकता, उपयोगिता, नियम, नियंत्रण, संतुलन 2.उदात्तीकरण, संरक्षण 3.विकासक्रम, विकास, जागृतिक्रम, जागृति 4.त्व सहित व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी)

न्याय को

संबंध, मूल्य, मूल्यांकन, उभयतृप्ति संतुलन के रूप में स्पष्ट किया गया है।

सम्बन्धों को

मानव संबंध और नैसर्गिक सम्बन्ध के विधि से प्रस्तुत किया जा चुका है।

- नियम और न्याय सूत्र में, से मानव संबंधों में **न्याय प्रधान नियम** और
- नैसर्गिक सम्बन्धों में **नियम प्रधान न्याय** का अनुभव मानव सहज रूप में किया जाना जागृति का द्योतक है।

- मानव संबंधों को सात प्रकार से नाम सहित प्रयोजनों को इंगित कराया है।
- संबंध क्रम से पोषण, संरक्षण, अभ्युदय, जागृति, प्रामाणिकता, जिज्ञासा, यतित्व, सतीत्व, विकास-प्रगति, दायित्व-कर्तव्य प्रयोजनों का स्वरूप है।
- इन प्रयोजनों के अर्थ में हर संबंधों का कार्यकलाप साक्षित होना ही विधि है।
- दायित्व और कर्तव्य के सम्बन्ध में व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी, परिवार और समाज में भागीदारी एक आवश्यकीय स्थिति और गति होना स्पष्ट किया जा चुका है।
- दायित्व और कर्तव्यों के साथ ही मौलिक अधिकारों का प्रयोग सार्थक होता है। जितने भी प्रयोजन है वह सब मानव कुल में ही प्रमाणित होता है।

वह माता-पिता, भाई-बहन, गुरू-शिष्य, मित्र, पति-पत्नी, स्वामी (साथी)-सेवक (सहयोगी), पुत्र-पुत्री। इसमें से पति-पत्नी संबंधों को छोड़कर बाकी सभी सम्बन्ध

- पुत्र-पुत्रीवत्,
- माता-पितावत्,
- गुरूवत्,
- शिष्यवत्,
- मित्रवत्,
- भाई-बहिनवत्,
- स्वामी-सेवकवत्

के रूप में पहचाना जाना सहज है। इसमें सर्वाधिक अथवा **विशाल रूप में होने वाले प्रतिष्ठा को मित्र के रूप में पहचाना जाना स्वाभाविक** है।